



INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

पंडित दीनदयाल उपाध्याय: निष्काम कर्मयोगी

¹ मुनीष कुमार, ¹ पीएचडी,

¹ दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन केंद्र,

¹ हिमाचल प्रदेश केंद्रीय विश्वविद्यालय, धर्मशाला, हिमाचल प्रदेश, भारत

सारांश:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति में एक विचारक, समाज सुधारक और नेतृत्वकर्ता थे। उनका योगदान भारतीय राजनीति और समाज की दिशा को प्रभावित करने वाला था। वे भारतीय राजनीति में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व थे। उनका जीवन संघर्षों से भरा हुआ था और वे भारतीय समाज के अन्तिम व्यक्ति तक पहुंचने के लिए सृजनात्मक कार्यों में लगे रहे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के उत्थान हेतु समर्पित किया। राजनीति के शिखर पर होते हुए भी वे चुनाव जीतकर संसद में नहीं पहुंचे। उनकी जीवन यात्रा का अन्त रहस्यमय परिस्थितियों में हुआ।

पंडित जी के जीवन का राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के एक प्रचारक से भारतीय जनसंघ के अध्यक्ष बनने तक का अध्ययन इस शोध में किया गया है। पंडित दीनदयाल जी का जीवन शुरू से अन्त तक संघर्षमय ही रहा। परन्तु विपरीत परिस्थितियां होने के बावजूद भी उन्होंने आम जनमानस के दिलों में अमिट छाप छोड़ी। दीनदयाल उपाध्याय ने राजनीति में शुचिता, आदर्श और नैतिकता को पुनः स्थापित करने का प्रयास किया। उनके विचारों ने भारतीय राजनीति को एक नई पहचान दी और वे एक ऐसे नेता के रूप में जाने जाते हैं जिन्होंने समाज के लिए अपने जीवन को समर्पित किया।

मुख्य शब्द: दीनदयाल उपाध्याय, राजनीति, राष्ट्र, चिंतन

प्रस्तावना:

राष्ट्रीय विचारक दीनदयाल उपाध्याय का जन्म विक्रमी संवत् 1973, शक संवत् 1838, अश्वनी माह, कृष्ण पक्ष, त्रयोदशी तिथि, सोमवार, 25 सितम्बर, 1916 को राजस्थान के जयपुर-अजमेर रेलवे मार्ग पर धानक्या नामक स्थान में हुआ (पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति, पृ. 5)।

दीनदयाल उपाध्याय को बचपन से ही अपने सगे संबंधियों की मृत्यु का अत्याधिक अनुभव हुआ। बचपन में ही उनके सिर से माता-पिता का साया उठ गया। कष्टमय बचपन के बावजूद वे जीवन पथ पर अग्रसर रहे। उन्होंने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र के उत्थान हेतु समर्पित किया। राजनीति के शिखर पर होते हुए भी वे चुनाव जीतकर संसद में नहीं पहुंचे। दीनदयाल उपाध्याय 20वीं सदी के ऐसे चिंतक एवं विचारक हुए, जिन्होंने भारतीय चिंतनधारा को गहराई से प्रभावित किया है। उनका चिंतन सनातन भारतीय जीवन मूल्यों की युगानुकूल व्याख्या है जिसने आधुनिक अध्येताओं को वर्तमान मानव जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान खोजने में सहायता की है। यही कारण है कि वर्तमान नीति-निर्माताओं के लिए भी दीनदयाल उपाध्याय का चिंतन पाथेय का काम कर रहा है। उन्होंने देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए केवल वर्तमान के सन्दर्भों में नहीं, बल्कि भविष्य के परिणामों के साथ स्वतंत्र विचार प्रस्तुत किए।

शोध उद्देश्य और प्रविधि:

दीनदयाल उपाध्याय का राजनीतिक जीवन राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित था। उनका राजनीतिक चिंतन भारतीय दर्शन पर आधारित है जो समाज एवं राष्ट्र के लिए अत्यंत उपयोगी है। वर्तमान में इस चिंतन की क्या प्रासंगिकता है, यह जानना अत्यंत आवश्यक है। चूँकि प्रस्तुत शोध ऐतिहासिक प्रकृति का है इसलिए तथ्यों के संकलन के लिए द्वितीयक स्रोतों का सहारा लिया गया है।

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव:

दीनदयाल उपाध्याय का झुकाव शिक्षा के दौरान भारतीय राष्ट्रियता और समाज के सुधार की दिशा में हुआ। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़कर समाज सेवा के कार्यों में भाग लिया। उन्होंने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लिया और भारतीय समाज के विभिन्न मुद्दों को समझने की कोशिश की। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़ाव उनके जीवन के एक महत्वपूर्ण मोड़ के रूप में देखा जा सकता है, यहीं से उनका राजनीतिक और सामाजिक दृष्टिकोण आकार लेने लगा।

सन 1937 में जब दीनदयाल उपाध्याय बी.ए. की शिक्षा के लिए एस.डी. कॉलेज, कानपुर में पढ़ने के लिए आए और छात्रावास में रहना शुरू किया तो वहां पर उनका राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में प्रवेश हुआ। कानपुर में बालूजी महाशब्दे और सुन्दर सिंह भंडारी भी इनके सहपाठियों में थे (शर्मा, 2018, पृ. 21)। बालूजी महाशब्दे ने दीनदयाल को राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की विशेषता से परिचय करवाया और उन्हें राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की शाखा में ले जाना शुरू किया (गोयनका, 2017, पृ. 13)। दीनदयाल उपाध्याय अध्ययन के साथ संघ-कार्य में भी रुचि लेने लगे। कानपुर में ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्थापक डॉ. केशवराव बलिराम हेडगेवार से उनकी भेंट हुई। तत्कालीन वरिष्ठ संघ प्रचारक बालासाहब आपटे और दादाराव परमार्थ भी उसी छात्रावास में ठहरते थे जहां दीनदयाल रहते थे (शर्मा, 2016, पृ. 67)। दीनदयाल उपाध्याय ने कानपुर में संघ की शाखा में वीर सावरकर का बौद्धिक करवाया। दीनदयाल उपाध्याय ने अंग्रेजी साहित्य में एम.ए. की शिक्षा के समय आगरा में नानाजी देशमुख और भाऊ जुनादे के साथ संघ-कार्य प्रारम्भ किया। वर्ष 1939 में उन्होंने नागपुर में आयोजित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का ग्रीष्मकालीन चालीस दिवसीय संघ शिक्षा वर्ग, प्रथम वर्ष, का प्रशिक्षण प्राप्त किया। उत्तर प्रदेश में संघ-कार्य की नींव रखने वाले भाऊराव जी देवरस से उनका परिचय राष्ट्र समर्पित जीवन जीने का महामांगलिक क्षण बन गया। मेधा को लक्ष्य मिला और उनकी शक्तियां राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कार्य में अधिकाधिक नियोजित होने लगी। दुबले पतले शरीर वाले दीनदयाल उपाध्याय संघ के बौद्धिक कार्यक्रम में हमेशा अग्रणी रहते थे। दीनदयाल उपाध्याय ने सन 1942 में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का संघ शिक्षा वर्ग, द्वितीय वर्ष, का प्रशिक्षण प्राप्त किया और उसके बाद उन्होंने अपना जीवन संघ के प्रचारक बन कर संघ-कार्य के लिए अर्पित कर दिया। उन्हें लखीमपुर खीरी में प्रचारक बनाकर भेज दिया गया (शर्मा, 2018, पृ. 21-24), जहां पर वह सन 1942 से सन 1945 तक जिला प्रचारक व विभाग प्रचारक रहे। दीनदयाल उपाध्याय की प्रतिभा को देखकर उन्हें उत्तर प्रदेश का सह प्रान्त प्रचारक बनाया गया, जिसका निर्वहन उन्होंने सन 1945 से 1951 तक किया। संघ प्रचारकों का जीवन अत्यंत साधारण होता है, वे ऐसे व्यक्ति होते हैं जिनके आचरण को देखकर लोग एवं अन्य स्वयंसेवक संघ के बारे में धारणा बनाते हैं। संघ प्रचारक का अनुकरणीय कार्य नए स्वयंसेवकों को देश सेवा का व्रत धारण करने के लिए प्रेरित करता है। इस दृष्टि से दीनदयाल का जीवन भी अनुकरणीय था। दीनदयाल के जीवन को सर्वाधिक प्रभावित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने किया। उनके जीवन पर तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरुजी, माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर, की अमिट छाप थी (शर्मा, 2018, पृ. 31)।

एकात्म मानवदर्शन का सिद्धांत:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का सबसे महत्वपूर्ण योगदान उनके द्वारा प्रतिपादित एकात्म मानवदर्शन के सिद्धांत में था। इस सिद्धांत के अनुसार, एक व्यक्ति की उन्नति तभी संभव है जब समाज के प्रत्येक वर्ग का विकास हो। उन्होंने समाजवाद और पूंजीवाद के बीच एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाया। उनका मानना था केवल आर्थिक विकास ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि मानवीय मूल्यों और संस्कृति की रक्षा भी जरूरी है।

संस्कृत और भारतीय संस्कृति में गहरी रुचि:

दीनदयाल उपाध्याय का जीवन भारतीय संस्कृति और उनके दर्शन से गहरे जुड़े रहने से था। वे संस्कृत के अध्ययन में विशेष रुचि रखते थे और इसे भारतीय सोच और विचारधारा का अभिन्न अंग मानते थे। उनका मानना था कि भारतीय समाज की मूल संस्कृति को संरक्षित रखना है और उसे आधुनिक समय के अनुसार लागू करना जरूरी है।

राजनीति में प्रवेश:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का राजनीति में प्रवेश भारतीय जनसंघ के माध्यम से हुआ। वे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ से जुड़े थे और उनका मानना था कि भारतीय राजनीति को भारतीय संस्कृति और मूल्यों के आधार पर चलाना चाहिए। उनका आदर्श “आत्मनिर्भरता” और “स्वदेशी” था। उन्होंने हमेशा भारतीय समाज की जड़ों को मजबूत करने और उसे पश्चिमीकरण से बचाने की कोशिश की।

दीनदयाल उपाध्याय का राजनीति में प्रवेश ऐसे समाजवादी चिंतन के चरम समय पर हुआ जब देश स्वतंत्रता के उपरान्त यह तय करने का प्रयास कर रहा था कि उसे विकास का साम्यवादी या पूंजीवादी मॉडल को अपनाना है (कुमार, 2020, पृ.21)। श्री गुरुजी, ने ही उन्हें राजनीति में भेजा और उनके विचारों में प्रखरता पैदा की। दीनदयाल का प्रत्यक्ष राजनीति में प्रवेश देश के एक महत्वपूर्ण राजनीतिक घटनाक्रम और जनसंघ की स्थापना के कारण हुआ। इस घटनाक्रम के परिणामस्वरूप आजादी के बाद राजनीतिक दलों का रूपायन हुआ। 21 अक्टूबर, 1951 को राधोमल आर्य कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, दिल्ली में डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने भारतीय जनसंघ की स्थापना की, तब दीनदयाल को उत्तर प्रदेश इकाई का प्रदेश मंत्री बनाया गया।

29, 30, 31 दिसम्बर, 1952 को जनसंघ का प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन कानपुर में संपन्न हुआ, जिसमें दीनदयाल उपाध्याय को जनसंघ का अखिल भारतीय महामंत्री नियुक्त किया गया। उनके साथ मौलीचन्द्र शर्मा को भी महामंत्री नियुक्त किया गया। यहीं से दीनदयाल उपाध्याय का भारतीय राजनीति में जनसंघ के नाते पदार्पण हुआ। प्रथम अधिवेशन में कुल पन्द्रह प्रस्ताव पारित हुए, जिसमें से सात प्रस्ताव अकेले दीनदयाल उपाध्याय ने रखे। दीनदयाल उपाध्याय के संगठन कौशल ने डॉ. मुखर्जी को गहराई से प्रभावित किया। उस समय उन्होंने कहा था कि 'अगर मेरे पास दो दीनदयाल हों, तो मैं भारत का नक्शा बदल दूँ' (शर्मा, 2018, पृ. 76)।

1953 में संस्थापक-अध्यक्ष की संदेहास्पद मृत्यु से जनसंघ को बड़ा झटका लगा, जो उस समय एक शिशु संगठन था (कुमार, 2020, पृ.22)। अनाथ संगठन के पोषण और इसे राष्ट्रव्यापी स्वरूप प्रदान करने की पूरी जिम्मेदारी अब दीनदयाल के कंधों पर आ गई। उन्होंने पार्टी के निर्माण का काम शुरू कर दिया। श्यामा प्रसाद मुखर्जी के निधन के बाद राजनीतिक क्षेत्रों में यह धारणा बन गयी थी कि अब जनसंघ नहीं चलेगा। लेकिन आम चुनावों के परिणामों ने यह सिद्ध कर दिया कि भारतीय जनसंघ न केवल जीवित है अपितु वह प्रगति भी कर रहा है। सांगठनिक, आन्दोलनात्मक तथा निर्वाचनीय दृष्टि से जनसंघ के कार्यकर्ताओं ने सन 1957 तक अपने अस्तित्व को सिद्ध किया, जिसके परिणामस्वरूप सन 1957 के दूसरे महानिर्वाचन में जनसंघ ने 127 लोकसभा तथा 650 विधानसभाओं पर प्रत्याशी खड़े किए। इनमें लोकसभा में 04 और विधानसभा में 51 प्रत्याशी चुनाव जीते (शर्मा, 2018, पृ.82)।

दीनदयाल 1967 तक जनसंघ के महासचिव रहे। इस दौरान अपनी प्रतिभा के बल पर उन्होंने जनसंघ को एक कोमल वृक्ष से एक शक्तिशाली बरगद के पेड़ के रूप में विकसित कर दिया। जो जनसंघ 1952 में एक छोटी सी इकाई था, जिस संगठन का स्थान 1952 और 1957 के चुनाव में लगभग नगण्य था, जो 1962 के चुनाव में पांचवे स्थान पर था वह संगठन 1967 तक दीनदयाल के अद्वितीय संगठन कौशल के द्वारा कांग्रेस के बाद दूसरा बड़ा राजनीतिक दल बन गया (कुमार, 2020, पृ.22)। दीनदयाल के अथक प्रयासों से सन 1962 के चुनाव में जनसंघ को 14 सीटों पर विजय प्राप्त हुई और जनसंघ की सीटों का विजय का ग्राफ 1967 तक 32 पहुंच गया (सिंह, 2019, पृ.54)। भारतीय जनसंघ के दिन-प्रतिदिन प्रभाव बढ़ने लगा और राजनीतिक दलों में घबराहट पैदा होने लगी। जनसंघ के विरुद्ध भ्रामक प्रचार होने लगा। जनसंघ की छवि विदेशों में भी बिगाड़ने के प्रयास होने लगे। दिसम्बर 1963 में दीनदयाल उपाध्याय फ्रेंड्स ऑफ इंडिया सोसाइटी के निमंत्रण पर छः सप्ताह के लिए अमेरिका गए। इस दौरान उन्होंने इंग्लैंड के साथ पूर्वी अफ्रीका की यात्रा भी की (सिंह, 2019, पृ.55)।

राष्ट्र के लिए समर्पित एक निष्काम कर्मयोगी के रूप में दीनदयाल उपाध्याय का जीवन उच्च आदर्श और सादगी का अभूतपूर्व उदाहरण था। शालीनता के साथ विनम्रता और आमजन के साथ सीधा संवाद उनके गुण थे। दीनदयाल में राजनीति और अध्यात्म का अपूर्व समन्वय था। उनकी पारदर्शी दृष्टि, निर्मल बुद्धि और प्रखर राष्ट्रभक्ति गंगाजल की तरह पावन है। उनका सम्पूर्ण जीवन विषम परिस्थितियों में व्यतीत हुआ। सभी प्रकार के आडम्बरों से दूर न्यूनतम आवश्यकताओं तक सीमित नितांत सादगीभरा सतत् कर्मरत उनका जीवन किसी महान तपस्वी एवं संन्यासी से कम नहीं था।

29 से 31 दिसम्बर, 1967 को भारतीय जनसंघ का 14वां राष्ट्रीय अधिवेशन कालीकट में हुआ। इस अधिवेशन में दीनदयाल उपाध्याय को जनसंघ का राष्ट्रीय अध्यक्ष बनाया गया (शर्मा, 2018, पृ.101)। विराट का दर्शन करने वाला महापुरुष जनसंघ का अध्यक्ष बनकर दक्षिण की ओर से अपना सन्देश देने चला (गोयनका, 2019, पृ. 25)। दीनदयाल उपाध्याय की अध्यक्षता का समाचार देश के कोने-कोने में पहुंच गया। कार्यकर्ता खुशी से झूम उठे, शोभायात्रा तो अभूतपूर्व थी मानो सारा केरल उमड़कर सड़कों पर आ गया हो। कालीकट की सड़कें फूलमालाओं से भर गयी, केसरिया रंग में नहा गयी, जयकारों से गगन गूंज उठा। दीनदयाल उपाध्याय का अध्यक्षीय भाषण अभूतपूर्व था। देश की किसी भी ज्वलन्त समस्या को नहीं छोड़ा, सभी का निदान प्रस्तुत किया (सिंह, 2019, पृ. 58)। वही सन्देश उनका आखिरी सन्देश था। विश्व के संपादकों ने उसकी भूरी-भूरी प्रशंसा की (गोयनका, 2019, पृ.26)। उन्होंने भारत के लिए एक विकेंद्रीकृत राजनीति और गांव में आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था की कल्पना की। उन्होंने आधुनिक तकनीक का स्वागत किया, लेकिन वे चाहते थे कि इसे भारतीय आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया जाए।

जनसंघ और भारतीय राजनीति:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय भारतीय राजनीति में एक प्रमुख राजनेता के रूप में उभरे। भारतीय राजनीति में एक वैकल्पिक पार्टी के रूप में जनसंघ खड़ा हुआ जिसने भारतीय संस्कृति, अखंडता और स्वाभिमान के मूल्यों को बढ़ावा दिया। पंडित दीनदयाल उपाध्याय का यह विश्वास था कि भारत को आत्मनिर्भर बनाने के लिए उसे अपनी संस्कृति, धार्मिक मूल्यों और परम्पराओं से जुड़े रहकर विकास करना

होगा। उन्होंने भारतीय राजनीति में एक नया दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसमें केवल आर्थिक मुद्दों की बजाय सामाजिक और सांस्कृतिक पहलुओं पर भी ध्यान दिया गया।

समर्पण और संघर्ष:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय का जीवन संघर्ष और समर्पण से भरा हुआ था। उन्होंने हमेशा भारतीय समाज के कमजोर वर्गों के लिए आवाज उठाई और उनके अधिकारों की रक्षा की। वे समाज में व्याप्त असमानताओं और अन्याय के खिलाफ थे और उनका मानना था कि भारतीय राजनीति को विकास के साथ सामाजिक न्याय के सिद्धांत पर भी चलना चाहिए।

अंतिम यात्रा:

संसद का बजट सत्र शुरू होने से पहले, 11 फरवरी, 1968 को भारतीय जनसंघ के संसदीय दल की बैठक नई दिल्ली में होनी निश्चित हुई। इसी तिथि को बिहार प्रदेश भारतीय जनसंघ की कार्यकारिणी की बैठक भी पटना में निश्चित हुई थी। 10 फरवरी की सुबह बिहार प्रदेश के संगठन मंत्री अश्वनी कुमार ने इस बैठक में दीनदयाल उपाध्याय के शामिल होने की स्वीकृति फोन पर प्राप्त कर ली। लखनऊ से सांयकाल 7 बजे चलने वाली पठानकोट स्यालदाह एक्सप्रेस ट्रेन से दीनदयाल उपाध्याय पटना के लिए रवाना हुए। रामप्रकाश गुप्त, उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश तथा पीताम्बर दास अनेक कार्यकर्ताओं के साथ दीनदयाल उपाध्याय को स्टेशन पर विदा करने आये (गोयनका, 2017, पृ. 26-27)। स्यालदाह एक्सप्रेस सीधी पटना नहीं जाती थी। मुगलसराय स्टेशन पर जब यह गाड़ी 2.15 बजे प्लेटफार्म नम्बर-1 पर पहुंची तो बोगी इस गाड़ी से काटकर दिल्ली हावड़ा में जोड़ दी गयी, इस गाड़ी का मुगलसराय से चलने का समय 2 बजकर 50 मिनट निश्चित था।

इसी बीच मुगलसराय स्टेशन के लीवरमैन ने टेलीफोन से सहायक स्टेशन मास्टर को सूचना दी कि स्टेशन से लगभग 150 गज पहले बिजली के खम्बा नम्बर 1276 के नजदीक एक लाश कंकड़ों पर पड़ी हुई है। सहायक स्टेशन मास्टर ने जो मेमो पुलिस को भेजा उस पर लिखा था 'आलमोस्ट डेड'। प्रातः काल होने पर रेलवे के डाक्टर ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। शव को कोई पहचान न सका। लगभग छः घंटे बाद शव को मुगलसराय स्टेशन पर लाकर रखा। जनसंघ के एक कार्यकर्ता ने शव को पहचान लिया और बोला अरे यह तो जनसंघ के अध्यक्ष दीनदयाल उपाध्याय हैं। पलभर में यह दुखद समाचार सारे देश में फैल गया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के तत्कालीन सरसंघचालक श्री गुरुजी को फोन पर सूचित किया गया (गोयनका, 2017, पृ. 28)। दिल्ली में संसदीय दल की बैठक समाप्त कर दी गयी। दीनदयाल उपाध्याय का शव वायु सेना के विमान से दाह संस्कार हेतु दिल्ली लाया गया। देश के कोने-कोने से जनसंघ के कार्यकर्ता, अधिकारी, मित्र अंतिम दर्शन के लिए दिल्ली पहुंचने लगे।

12 फरवरी को लगभग पांच लाख लोग उनकी शव यात्रा में शामिल हुए। शव यात्रा छः बजे निगम बोध घाट पहुंची। शव को चिता पर रखा गया, इसके पश्चात 6.45 बजे अंतिम श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। सांयकाल 7.06 बजे मंत्रोच्चारण के बीच अग्नि प्रज्ज्वलित कर दी गयी (गोयनका, 2017, पृ. 30-31)। अपार जनसमूह शोक में डूबा हुआ था। ऐसा लग रहा था मानो हर एक ने अपने परिवार का सदस्य खो दिया हो। सभी दलों के नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं, संगठनों एवं पत्रकारों ने श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए अपनी हृदय वेदना को व्यक्त किया। इस दुनिया में जो इंसान बहुत अच्छे होते हैं उन्हें बहुत जल्द ही वापिस बुला लिया जाता है। शायद इस संत के भी अज्ञात शत्रु थे, जिन्होंने इस देश के एक पुत्र को छीनने की साजिश रची।

निष्कर्ष:

पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसा राजनेता थे, जिन्होंने भारतीय राजनीति को न केवल नई दिशा दी, बल्कि समाज और संस्कृति के लिए भी एक स्थायी धरोहर छोड़ी। उनका जीवन और विचारधारा आज भी लाखों लोगों को प्रेरित करती है और भारतीय राजनीति की नींव को मजबूत बनाती है। उनके सिद्धान्तों का पालन करके हम एक सशक्त और आत्मनिर्भर भारत की दिशा में कदम बढ़ा सकते हैं। पंडित दीनदयाल उपाध्याय ने भारतीय राजनीति को एक नई दिशा दी और उनका एकात्म मानववाद और स्वदेशी का सिद्धांत आज भी भारतीय राजनीति में प्रासंगिक है।

स्वतंत्रता के पश्चात भारतीय राजनीति में पंडित दीनदयाल उपाध्याय एक ऐसे राजनेता के रूप में जाने गए जिन्होंने मूल्य खो रही राजनीति में पुनः शुचिता, आदर्श एवं मूल्यों को स्थापित किया। वे मानुषत्व को स्थापित करने वाले ऐसे महापुरुष थे, जिन्होंने अपना संपूर्ण जीवन समाज के लिए अर्पित किया। भारतीय राजनीति के ऐसे राजनेता थे जिन्होंने देश को एक सशक्त विपक्ष की भूमिका के महत्व को समझाया। दीनदयाल उपाध्याय ने प्राचीन भारतीय दर्शन की व्याख्या करते हुए समाज को समता, समानता एवं सर्वोदय पर आधारित जीवन जीने का नवीन मार्ग दिया। दीनदयाल उपाध्याय भारतीय सनातनी परम्परा के ऐसे कर्मयोगी थे जिनका सम्पूर्ण जीवन मानव कल्याण और समाज की निःस्वार्थ सेवा में व्यतीत हुआ। राष्ट्र सेवा को सर्वोपरि मानने वाले दीनदयाल उपाध्याय एक व्यक्ति नहीं अपितु एक विचार और एक जीवन शैली का सुन्दर सम्मिश्रण थे।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची :

- उपाध्याय, डी.डी. (2014). *पोलिटिकल डायरी*. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.
- उपाध्याय, डी.डी. (2017). *एकात्म मानववाद: तत्व मीमांसा, सिद्धांत, विवेचन*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- कुमार, ए.(2020). *पं दीनदयाल उपाध्याय विचार दर्शन*. नारायणगढ़ : मूनआर्क क्रिएशन्स.
- कुमार, ए., & कुमार,पी. (2023). *दीनदयाल उपाध्याय शोध के विभिन्न आयम*. नारायणगढ़ : मूनआर्क क्रिएशन्स.
- केलकर, वी. के. (2014). *पंडित दीनदयाल उपाध्याय आडीओलोजी एंड परसेप्शन: पोलिटिकल थोट*. नई दिल्ली: सुरुचि प्रकाशन.
- गोयनका, के.के. (2017). *पंडित दीनदयाल उपाध्याय व्यक्ति दर्शन*. नई दिल्ली: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास.
- झा, पी. (संपादक). (2019). *विचारकों की दृष्टि में एकात्ममानववाद*. दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- पंडित दीनदयाल उपाध्याय स्मृति समारोह समिति. (2022). *पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय स्मारक, धानक्या*. जयपुर: लेखक.
- शर्मा, एम.सी. (2016). *दीनदयाल उपाध्याय सम्पूर्ण वांग्मय, खंड 1-15*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- शर्मा, एम.सी.(2018). *दीनदयाल उपाध्याय: कृतित्व एवं विचार*. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन.
- सांखला, एम. (2019). *युगपुरुष पंडित दीनदयाल उपाध्याय*. नई दिल्ली: राज प्रकाशन.
- सिंह, के.के. (2018). *पंडित दीनदयाल उपाध्याय: मैनु,मिशन एंड मैसज*.नई दिल्ली: राज पब्लिकेशन्स.
- सिंह, ए. (2019). *एकात्म मानववाद के प्रणेता दीनदयाल उपाध्याय*. नई दिल्ली: प्रभात पेपरबैक्स.